International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(2): 18-21

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(2): 18-21
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 25-12-2022
Accepted: 30-01-2023

Pabitro Barman
Research Scholar at Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

Corresponding Author:
Pabitro Barman
Research Scholar at Jawaharlal Nehru University, New Delhi, India

महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश के आधुनिक संस्कृत साहित्य में अवदान

Pabitro Barman

प्रस्तावना

महामहोपाध्याय हरिदास सिद्धान्तवागीश के पुरा नाम हरिदास भट्टाचार्य। हरिदास सिद्धांतवागीश 20वीं शताब्दी मूर्धन्य नाटककार हैं। हरिदास जी के जनम 1876 ई. 22 अक्टूबर अविभक्त वांला फरीदपुर जिले के कोटालिपारा उनशिया गांव में हुआ था। हरिदास जी महान आचार्य मधुसूदन सरस्वती के वंशज हैं। उनके दादाजी काशिचन्द्र बचस्पति और पिताजी गङ्गाधर विद्यालङ्कार भी संस्कृत के विद्वान थे। वह पश्चिम वैदिक ब्राह्मण थे।

हरिदासजी ने पहले आपने पिताजी और दादाजी के साथ व्याकरण का अध्ययन किया और स्वग्राम की आर्य शिक्षा समिति की व्याकरण परीक्षा में हरिदासजी के उपलब्धि और ज्ञान के लिए "शब्दाचार्य" उपाधि से सम्मानित किया गया। उसके बाद हरिदासजी फरीदपुर के आनन्दचन्द्र विद्यारत्न और कलकत्ता के जीवनानन्द विद्यासागर महाशय से कविता, व्याकरण, स्मृति शास्त्र, पुराण, ज्योतिषादि का अध्ययन किया है और इस विषयों में यथायथरुपे विभिन्न परीक्षाओं को सफलतापूर्वकोत्तीर्ण के हरिदासजी को "व्याकरणतीर्थ", "काव्यतीर्थ" प्रभृति उपाधियाँ मिलीं। तदनन्तरं उन्हें ढाका के पूर्वी बङ्गाल सारस्वत समाज द्वारा "सांख्यरत्न","पुराणाशास्त्री", और "सिद्धान्तवागीश", उपाधियौं से सम्मानित किया गया। इस लिए हरिदासजी के नाम के साथ सिद्धान्तवागीश उपाधि प्राप्त हुआ। आपनी शिक्षा पूरी करने के बाद हरिदास सिद्धान्तवागीशजी त्रिपुरा के राजदरबार मैं राजपण्डित बन गाए। उसके बाद कोटलीपारा में आर्य विद्यालय, खुलना में नकीपुर टोल में पढ़ाता था। नकीपुर में चतुस्पति के सामने एक प्रिंटिंग प्रेस स्थापना किया, जो बाद में स्थानान्तरित किया कलकत्ता। 1960 में भारत सरकार हरिदासजी को 'पद्मभूषण' से सन्मान किया। तद्भिन्न 'भारताचार्य्य', 'रवीन्द्र-पुरस्कार' लाभ किया। अन्तिम में 1961 ई. 26 डिसेम्वर स्वर्गप्राप्ति हुआ।

हरिदास सिद्धान्तवागीश के साहित्यकर्म

हरिदास सर्वप्रथम 15 वर्ष की किशोरावस्था में "कंसवधम्" नाटक लिखा और 18 वर्ष की आयु में "जानकीविक्रमम्" नाटक लिखा। हरिदास ने संस्कृत में कई मूल पुस्तकें लिखीं और पंद्रह महत्वपूर्ण पुस्तकों का सम्पादित किया। उनकी ग्रन्थौं में महाकाव्य, नाटक, खण्डकाव्य, उपन्यास, टीकाग्रन्थादि भी हैं।

- महाकाव्य - रुक्मिणीहरणम् (1910)
- नाटक – वङ्गीयप्रतापम् (1918), शिवाजीचरितम् (1945),शङ्करसम्भवम्
- खण्डकाव्य - वियोगवैभवम्,
- और भी बहुतसारेग्रन्थ हैं - मिवारप्रतापम्, प्रतापादित्य चरित्र
- नाटिका-विराज सरोजनी (1899)
- स्मृतिचिन्तामणि (1909)
- अलंकार - काव्यकौमुदी (1951)
- उपन्यास - सरला (1953)
- टीका-टिप्पणी ग्रन्थ – विश्वनाथविरचित साहित्यदर्पण की टीका - "कुसुमप्रतिमा" (1928),
- श्रीहर्षविरचित नैषधचरित की टीका – जयन्ती
- कालिदासविरचित मेघदूत की टीका – चञ्चला (1919)।,

- शिशुपालवधटीका,
- दशकुमारचरित की टीका – कुमारसन्तोषिणी
- रघुवंशटीका (1914),
- किरातार्जुनीयटीका,
- अभिज्ञानशकुन्तल की टीका- अभिज्ञानकौमुदी (1926)
- विशाखदत्तविरचित मुद्राराक्षस की टीका – चाणक्यचातुरी (1929)।
- कादम्बरी की टीका – कल्पलता (1950),
- शूद्रकविरचित मृच्छकटिक टीका – वसन्तसुषमा।
- वैदिकविवादमीमांसा विद्यावित्तविवाद।

इतनी सारी ग्रन्थ की अतिरिक्त और एक प्रसिद्ध ग्रन्थ है - महाभारत की टीका - भारतकौमुदी।

काव्यकौमुदी इस ग्रन्थ में

"पक्षाब्धिनागेन्दुमिते शकाब्दके सौराश्विने तेन चतुर्दशे दिने।
विनिर्मिता श्रीहरिदासशर्मणा समाप्तिमाप्ता किल काव्यकौमुदी॥"

काव्यकौमुदीलक्षणसूत्र ग्रन्थ में पञ्चदश कला हैं। इस ग्रन्थ में काव्यशास्त्र की सारे तत्त्व व्याख्या है। प्रथम में काव्यस्वरुप और प्रयोजन, द्वितीय में दृश्यकाव्य, तृतीय में श्राव्यकाव्य, चतुर्थ में ध्वनि, पञ्चम में गुणीभूतव्यङ्ग्य, षष्ठ में शक्तित्रय, सप्तम में रस, अष्टम में नायकादि, नवम में नायिकादि, दशम में दोष, एकादश में गुण, द्वादश में रीति, त्रयोदश में शब्दालङ्कार, चतुर्दश में चित्रादि अलङ्कार, पञ्चदश में अर्थालङ्कार वर्णित है । (काव्यकौमुदी-सम्पा. वासवचन्द्रभट्टाचार्य, कलिकाता, 1955)

शिवाजीचरित: शिवाजीचरित दस अंकों का नाटक है। यहा छत्रपति शिवाजी के संघर्षों तथा उनके द्वारा महाराष्ट्र राज्य की स्थापना की कथा है। इसको कवि ने 1945 ई. में रचा। शिवाजीचरित की प्रस्तावना में कहा गया है कि देश प्रेम की आग जलाने के लिए इस नाटक का अभिनय किया जा रहा है - "येन साम्प्रतं सर्व एव स्वाधीनतां कामयते, वयं च तदुद्दीपनमेव कञ्चित् प्रबन्धमभिनेतुमभिप्रेमः।"
नाटक के प्रथम अङ्क का आराम्भ शिवाजी के विद्यार्थी जीवन से होता है जिसमें वे अपने साथी गोविन्द के साथ हिन्दुओं के गौरव की रक्षा और उनके उद्धार की योजना बनाते हैं। द्वितीय अङ्क में तोरण दुर्ग की विजय। तृतीय अङ्क में बीजापुर के सुल्तान नादिर द्वारा शिवाजी के पिता साहनाथ की कैद। चतुर्थ अङ्क में शिवाजी द्वारा सेनापति अफजल खा का वध। पञ्चम अङ्क में नादिरशाह शिवाजी के ऊपर दमन के कुचक्र चलाता है। षष्ठ अङ्क में शिवाजी सायस्ता खान की सेना को परास्त करते हैं, इसके अनन्तर विष्कम्भक में मुगल साम्राज्य के सेनापति जयसिंह का दक्षिण प्रयाण और शिवाजी से सन्धिकर उनको छत्रपति की उपाधि देना। सप्तम अङ्क में शिवाजी का दिल्ली प्रस्थान, दिल्ली दरबार में शिवाजी का अपमान, उनको बन्दी बनाया जाना। अष्टम अङ्क में शिवाजी का गृहबन्दी में बीमारी का बहाना तथा मिठाई की टोकरी में बैठकर गृहबन्दी से निकल जाना। शिवाजी को पकड़ने के लिए औरङ्गजेब की सेना का पीछा करना, जयसिंह के पुत्र मर्द्दान सिंह का शिवजी से आत्म समर्पण का प्रस्ताव, शिवाजी द्वारा उनको मुंहतोड़ उत्तर। दशम अङ्क में शिवाजी का राज्यभिषेक, स्वामी रामदास का शिवाजी को आशीर्वाद-ताप प्रभृति वर्णन है। यह लम्बी कथा नाटक को महानाटक का रुप देती है। नाटक में शिवाजी के उत्साही, दृढ़संकल्प, भय-विहीन, दुर्धर्ष वीर-चरित वर्णित है-

"तेजस्विनं कौशलिनं महाथियं शूरं तथा को नु रुणद्धि हन्तु वा।
आहन्यमानोऽग्निकणो हि तेजसा प्रवर्धते संचरतेऽन्यवस्तु।"

मिवारप्रताप: मिवारप्रताप षष्ठ अङ्क विशिष्ट नाटक है। प्रथम अङ्क में अकबर के सेनापति मानसिंह के उदयपुर आगमन से होता है, जिसमें मानसिंह के स्वागत में राणाप्रताप या उनके पुत्र अमर ने उनके साथ भोजन न कर उनका तिरस्कार किया। मानसिंह अपमानित होकर दिल्ली लौटा, जिसके फलस्वरूप मुगलसेना ने राणा प्रताप से युद्ध की तैयारी की - यद्यमुष्य प्रतीकारं न कर्य्यां वीर्य्यवानपि। तदाम्वरं न यास्यामि यास्याम्वरतां पुनः।
द्वितीय अङ्क मुगलोद्यान में मीना बाजार (महिला मेला) का वर्णन है। इस महिला मेला में बीकानेर के पृथ्वीराज की रानी कमला को बुलाया गया था, कमला के प्रति अकबर की दृष्टि ठीक नहीं थी, कमला ने अपनी कटार निकाल ली और उद्यानपालिका को आतंकित कर उद्यान से घर चली गयी। नाट्यकार ने पृथ्वीराज की रानी कमला द्वारा मुगलोद्यान में हिन्दुत्व गौरव की याद कराकर तथा राणा प्रताप में विधर्मियों में विजय किये जाने की आशा बांधकर इस मुगलोद्यान मेला को मुख्यकथा के साथ संयुक्त किया है। इस संयोजन को उक्ति विन्यास कहा जा सकता है। रानी कमला की हार्दिक कामना है –

"एकः स्फुलिंगो ग्रसते महावनं
रुद्रः किलैको धुनुते जगज्जनान्।
एको मरुत् पातयते च पादपान्
एकः प्रतापोऽपि तपेद् विधर्मिणः॥"

तृतीय अङ्क में दिल्ली लौटकर मानसिंह अपने अपमान की बात बादशाह अकबर से कहता है। अकबर के पुत्र सलीम भावी जहांगीर के नेतृत्व में एक लाख मुगल सेना ने राणा प्रताप को दण्डित करने के लिए आक्रमण किया। चतुर्थ अङ्क में राणा प्रताप की राजपूत सेना ने हल्दीघाटी के मैदान में मुघल सेना का सामना किया, हारजीत तो किसी के पक्ष में नहीं हुई, लेकिन राणा प्रताप को अपनि रक्षा की दृष्टि से युद्धभूमि से हट जाना पड़ा। ठीक उसी समय उनको भाई शक्ति सिंह के हृदय में भाई के प्रति अगाध स्नेह उमड़ पड़ा, अब तक शक्तिसिंह मुगल-सेना के साथ था। लेकिन भाई द्वारा सम्मान की रक्षा हेतु युद्ध में यह पराक्रम देखकर उसने अपने को धिक्कारा, वह आगे भाई की रक्षा के लिए बढ़ा, जो दो मुगल सैनिक राणा प्रताप का पीछा कर रहे थे, उनको रास्ते में तलवार के घाट उतार दिया। दोनों भाई गले मिले। इसी समय राणा प्रताप का चेतक अश्व जो युद्ध से थक चुका था, मूर्च्छित होकर गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गायी। राणा प्रताप का हृदय उसके प्रति संवेदना से भर उठा। इस प्रकार इस नाटक का चतुर्थ अङ्क समूची कथावस्तु का हृदय है। पञ्चम अङ्क में राणा प्रताप के वनवासी जीवन ओर उसकी कठिनाइयों का वर्णन है, जिसमें उनको अपनी कन्या के लिए घास की रोटी पकानी पड़ी और उसे भी वनविलाव उठा ले गया। इस पर उन्होंने अकबर को सन्धि पत्र लिखा। षष्ठ अङ्क में अकबर ने वह सन्धि-पत्र उत्तर लिखावाया। पृथ्वीराज ने कुछ ऐसा लिखा, जिससे राणा प्रताप को अपने किये संघर्ष के महान् गौरव का बोध हुआ और वे पुनः अपने देश की स्वतंत्रता के संघर्ष में संलग्न हो गये। उनके पुराने खजांची भामाशाह ने उन्हें ले आकर विपुल धन दिया, जिससे खाद्य सामग्री इकट्ठा कर राणा प्रताप ने पुनः सेना का संगठन किया। देवीदुर्ग पर आक्रमण करके उसे विजित किया गया, दुर्ग में रहने वाले शाहबाज को बन्दी बना लिया गया, भागते हुए मुगल सैनिकों ने दुर्ग में आग दी। भीलों ने उसे खाई के जल से बुझा दिया। अन्ततः राणा प्रताप विजयी हुए। राणा प्रताप के साथ भीलों के सहयोग का वर्णन यथार्थ स्थिति का चित्रण है। नाटक में पात्रों की संख्या 50 के लगभग है।एक तरह से देश-प्रेम ही नाटक का विधेय है और वह देश भारत, हिन्दुस्थान है-

"हिन्दुस्थाने यवनवसतिर्नोचिता भारतेऽस्मिन्
नीहारौघस्थितिरिव शरद्व्योम्नि नक्षत्रदीप्ते।
तस्मादस्मान्निजनिजधिया यात यूयं स्वदेशान्
अस्रस्रोतः स्रवतु न खलु च्छिन्नभिन्नाच्छरीरात्॥"

विराजसरोजिनी: विराजसरोजिनी इतिहास घटनावलम्वने द्वितीय नाट्यकृति है। इसकी रचना हरिदास महाशय युवावस्था में 1999 ईस्वी में की थी। पहले नौ नृत्य

और गीत है। पहले अंग में श्रृंगार रस का गीत नायिका और उसकी सहेलियों द्वारा गाया जाता है । यह गीत मातृभूमि की भक्ति, और उसकी रक्षा की बात करता है। रचना में वीर रस की प्रधानता है । इस नाटक के माध्यम से नाटककार हरिदास महाशय वीर सैनिकों को श्रद्धांजलि देते हैं और संगीत के माध्यम से मातृभूमि के प्रति प्रेम को दर्शाते हैं ।

बङ्गीयप्रताप: बङ्गीयप्रताप में संगीत द्वारा नाटक का भाव प्रकाश हुआ था । नाटक में संगीत, आध्यात्मिकता, साधना, नृत्य, विजयोल्लासादि वर्णन है।प्रथम अङ्क में शङ्कर नाम के एक व्यक्ति यवनौं के अत्याचारों की वाद की है । द्वितीय अङ्क में वैष्णव संत श्रीनिवास के संगीत के माध्यम से मानव जीवन और आध्यात्मिक खोज की नश्वरता से संबंधित है। तृतीय अङ्क में विष्कम्भक, धीवरगण की प्राकृत भाषादि वर्णन है। पञ्चम अङ्क में नृत्य और गीत के माध्यम से विजयोल्लास किया है। बङ्गाल के यशोर राज्य के राजकुमार प्रताप के वीर चरित और हिन्दुत्व प्रेम की यशोगाथा है । इस रचना का काव्य पक्ष तो उदात्त है ।

सरला: सरला एक सामाजिक उपन्यास है । इस उपन्यास की पात्र-पात्री चरित्र के माध्यम से सुचित्रित किया है । कोई एक आंधी-तूफान में नाव एक युवती कन्या सहित खतरा मैं, तव अलग एक नाव से एक युवक कन्या को बचाने के लिए पानी में कूद जाता है और कन्या को बचाता है। कन्या का माता-पिता धन्यवाद ज्ञापने युवक से शादी करा देते है । संकट की घड़ी में माता-पिता द्वारा कन्या को अकेला छोड़ देने की पीड़ा को इस उपन्यास के लेखक ने बड़ी खूबसूरती से चित्रित किया है ।

वियोगवैभव: दो सर्ग विशिष्ट एक खण्डकाव्य है । नायक-नायिका के वियोग की घटना पर आधारित कवि ने यह खण्डकाव्य लिखी थी । प्रथम स्वर्ग का नाम यामिनीवैभव है, जिसके श्लोक संख्या 62 है । कवि ने द्वितीय सर्ग का नाम नहीं किया, जिसके श्लोक संख्या 63 है । यहाँ कामदेव की विरह-वेदना का वर्णन किया गया है । काव्य में प्रथम कुशल यज्ञ सती के बलिदान के बारे में शिव के तांडव नृत्य की स्तुति की गई है –

"परमपुरुषरूपोऽप्यर्धनारीशरीरी
रहयतु विरहोऽसौदुःसहो वश्चिराय।"

प्रथम सर्ग में कामदेव मदन की यौवनविलास सुन्दररुपे वर्णित है । कवि ने प्रथम सर्ग में मालिनी और अन्तिम श्लोक में मन्दक्रांत छन्द का प्रयोग किया है । उनकी कथा में कालिदास रचना का प्रभाव मिलते है। दम्पति शारीरिक मुख-ऐश्वर्य को अतिशयोक्ति, श्लेषादि अलङ्कार वर्णित किया गया है ।

रुक्मिणीहरण: रुक्मिणीहरण हरिदास सिद्धांतवागीश के एक महाकाव्य है। ढाका सारस्वत समाज ने इस महाकाव्य रचना के लिए हरिदास सिद्धांतबागिश को "श्यामासुंदरी" शोध पुरस्कार से सम्मानित किया । रुक्मिणीहरण महाकाव्य 16 सर्गों में विभक्त है, जिसका प्रमुख रस वीर है । यह महाभारत के वनपर्व से कृष्ण द्वारा विदर्भ की राजकुमारी रुक्मिणी के अपहरण की कहानी पर आधारित है । महाभारत के अलावा, ब्रह्मवैवर्तपुराण, विष्णुपुराण, हरिवंश और श्रीमद्भागवतम में भी यह कहानी है । 16 सर्ग विशिष्ट महाकाव्य की विषयवस्तु है - प्रथमसर्ग - रुक्मिणी की जन्म वृत्तान्त, द्वितीयसर्ग - राजकुमारों और राजकुमारियों की शिक्षा, तृतीयसर्ग - रुक्मिणी के भाई का राज्याभिषेक, चतुर्थसर्ग - रुक्मिणी के साथ कृष्ण का परिचय, पञ्चमसर्ग - राजकुमार की श्रीकृष्ण से विद्वेष, षष्ठसर्ग - रुक्मिणी का कृष्ण को प्रेम पत्र ज्ञापन करना - व्रजितास्मि तत्र ससखी परकः परितोवृता... प्रहरिभिरुद्यतायुधैः।... प्रभृति , सप्तमसर्ग - कांचुकी के विदर्भ से द्वारका तक मार्ग का वर्णन है, अष्टमसर्ग - कृष्ण और कांचुकी के कथोपकथन,
नवमसर्ग - श्रीकृष्ण की रुक्मिणी का अपहरण करने के लिए विदर्भ यात्रा, दशमसर्ग - रुक्मिणी की कृष्ण से गुप्त मुलाकात, एकादशसर्ग - सम्भोग श्रृंगार रस वर्णन, द्वादशसर्ग - शिशुपाल के आने पर रुक्मिणी ने उसका स्वागत किया, त्रयोदशसर्ग - श्रीकृष्ण रुक्मिणी का हरण, चतुर्दशसर्ग - कृष्ण के लिए युद्धयात्रा, पञ्चदशसर्ग - युद्ध में कृष्ण की जीत हैं, षष्ठदशसर्ग - वासुदेव भीष्मक की उपस्थिति में कृष्ण-रुक्मिणी विवाह वर्णित है ।
इस महाकाव्य में हरिदास अपने वंश के यशस्वी पूर्वजों का परिचय देते हैं । इस महाकाव्य में उन्होंने कुछ पुरानी घटनाओं को बदलकर काव्य की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए नए अंश जोड़े । व्यापक प्रेम पत्रों का प्रयोग इस महाकाव्य की विशेषता है । पञ्चदश सर्ग में शब्दालंकार और अर्थालंकार के विशेष प्रयोग से महाकाव्य समृद्ध हुआ है ।

- शङ्करसम्भवम् – शंकराचार्य की जीवनी पर आधारित 5 स्वर्ग खंडकाव्य शङ्करसम्भवम् ।
- कंसवधम् – कंसवध की कथा पर आधारित कंसवधम् ।
- वैदिकवादमीमांसा – पश्चिमी वैदिक ब्राह्मणों के कान्यकुब्ज से बंगाल में आने के संदर्भ में वैदिकवादमीमांसा ।
- जानकीविक्रमम् – जानकी विक्रम दशरथ नंदन रामचंद्र की वीरकथा के बारे में है।
- षड्दर्शनसमुच्चय – भारतीय 6 आस्तिक दर्शनों के सार पर षदर्शनसमुचादि ।

और भी कोई ग्रन्थ, टीकाग्रन्थ अप्रकाशित है ।
समकालीन संस्कृत साहित्य में परम्पराओं का सन्धान और पुनःसन्धान किया गया है। हरिदास सिद्धान्तवागीश ने बङ्गला मैं भी कुछ पुस्तकों लिखी हैं । हरिदासजी जीनकपुर नरेश के टोल प्रध्यापक रहे । इनके नाटकों में समाजचेतना, राष्ट्रीय पुनरुत्थान का प्रबल भाव है। रङ्गमञ्च की दृष्टि से इनके नाटक सफल हैं और कई बार अभिनीत किए गये हैं । युगानुरूप सरल और ओजस्वी गद्यविन्यास तथा भाषा के प्रवाह के कारण हररदासजी की रचनाओं में सुपाठ्यता है । आधुनिक संस्कृत साहित्य को सर्वांगीण रूप से विकास किया ।

सन्दर्भ ग्रन्थसूची

1. संस्कृत वाङ्मय का वृहद् इतिहास - (7म खण्ड) आचार्य जगन्नाथ पाठक (सम्पा.), उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनउ, 2000 ।
2. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य: दशा एवं दिशा - डॉ. मञ्जुलता शर्मा (सम्पा.), परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2004 ।
3. आधुनिक संस्कृत काव्य परम्परा - श्री केशव मुसलगाँओकार, वाराणसी ।
4. आधुनिक संस्कृत साहित्य के नये भावबोध - डॉ. मञ्जुलता शर्मा, संस्कृत ग्रन्थगार, दिल्ली-अहमदाबाद, 2010 ।
5. आधुनिक संस्कृत साहित्य (1910-2010) छोटगल्प ओ नाटक - डः ऋता चट्टोपाध्याय, प्रग्रेसिभ पावलिशार्स, कलकाता, 2012 ।
6. संस्कृत साहित्येः वीसवी शताब्दी - डः राधावल्लभ त्रिपाठी ।
7. भारतवर्षे आधुनिकसंस्कृतसाहित्यम् : विहङ्गमदृष्ट्या परिशीलनम् - डः शुभ्रजित् सेन, संस्कृत पुस्तक भण्डार, कोलकाता, 2019 ।
8. संस्कृत-वाङ्मयस्य इतिहासः - धीरेन्द्रनाथ वन्द्योपाध्याय ।
9. विंश-शताब्दी संस्कृत ग्रन्थ सूचीपत्रम् - मिश्रोइभिराज राजेन्द्रः।
10. आधुनिक संस्कृत साहित्य - डः मैत्रैयी कुमारी, ग्रन्थभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2022 ।
11. आधुनिक संस्कृत साहित्येर संक्षिप्त इतिवृत्त - डः शिप्रा राय, संस्कृत वुक डिपो, कलकाता, 2017 ।
12. अर्वाचीन (आधुनिक) संस्कृत साहित्येर इतिहास 1801-2020 - वनविहारी घोषाल, पारुल प्रकाशनी प्राइभेट लिमिटेड, कलकाता, आगरतला ।
13. आधुनिकसंस्कृतसाहित्ये वीरेन्द्रकुमारभट्टाचार्यस्य कलापिका/सनेट ।
14. आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा -डॉ. मञ्जुलता शर्मा, राष्ट्रीय-संस्कृतसंस्थान (मानितविश्वविद्यालय), नवदेहली, 2011 ।
15. अर्वाचीन संस्कृत साहित्य - डॉ. राजमङ्गल यादव, जे. पी. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2015 ।
16. Modern Sanskrit Literature Tradition and Innovations: Edited by S.B. Raghunath Acharya.

आन्तर्जाल

1. https://en-m-wikipedia-org.translate.goog.translate.goog/wiki/Haridas_Siddhanta_Bagish?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
2. https://hi.unionpedia.org/%E0%A4%B9%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A4%BE%E0%A4%B8_%E0%A4%B8%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%A7%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A4_%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A5%80%E0%A4%B6
3. https://sanskritbhasi.blogspot.com/2014/05/blog-post_17.html?m=1